निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शांति अपार ।टेक।।

चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार।
पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्मतत्त्व ही सार।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शांति अपार।।१।।

हस्त-युगल जिनवर कहें,पर का करता होय।
ऐसी मिथ्या बुद्धि से ही, भ्रमण-चतुर्गति होय।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शांति अपार।।२।।

लोचन-द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार।
पर दुःखमय गति-चार में, ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार।
यातें नासादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शांति अपार।।३।।

अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरसाय।
जिन-दर्शन कर निज-दर्शन पा सत्-गरु वचन सुहाय।
यातें अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर झलके शांति अपार।।४।।